an>

title: Need to make proper arrangements to enable farmers to purchase seeds, fertilizers and other agricultural material with old 500 and 1000 rupee notes.

श्री सत्यपाल सिंह (सम्भल) ः मैं सरकार का ध्यान अतिमहत्वपूर्ण विषय "500 " और "1000 " रूपए के नोट बंदी के दौरान किसानों की विवशता की आकृष्ट करना चाहता हूँ। जैसा कि सर्वविदित है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। अधिकांश भारतीयों का मुख्य रोज़गार खेती है। कहते हैं कि भारत की आत्मा खेत-खलिहानों में वास करती है। किसानों के लिए मध्य अक्टूबर से नवम्बर तक फसलों की बुआई, खासकर गेहूँ, दलहन (चना, मसूर, मूंग् और खेसारी), तिलहन (तोडी, सरसो और अलसी) और आलू की बुआई का समय होता है। इन दिनों किसानों को बीज, खाद और कीटनाशक दवाएं इत्यादि खरीदनी पड़ती हैं, पर सरकार 500 और 1000 रूपए के नोटों को बदलने और निकालने के लिए बैंकों और डाकघरों में लम्बी-लम्बी कतारें लगी रहती हैं। ऐसी नाजुक घड़ी में किसान खेत की जुताई करने, बुआई के लिए बीज, खाद और कीटनाशक दवाईयाँ खरीदने के लिए कठिनाइयों से जूझ रहे हैं। ऐसे में किसानों के लिए कहीं कोई स्थान का निर्धारण नहीं किया गया है। जहाँ किसान द्वारा 500 और 1000 रूपए का नोट स्वीकार्य कर खाद, बीज और कीटनाशक दवाएं उपलब्ध कराई जाएं।

मेरी सरकार से विनम्र प्रार्थना है कि स्वास्थ्य केन्द्रों, पेट्रोल पंपों, बिजली ऑफिसों की तरह कई जगह जैसे ब्लॉक कार्यालय, पंचायत कार्यालय इत्यादि में किसानों से 500 और 1000 रूपए का नोट लेकर बीज, खाद इत्यादि सामग्री प्रदान की जाए और साथ ही साथ सरकारी कर्मचारी, जो लगान की राशि जमा करते हैं, का सख्त निर्देश दिया जाए कि किसानों द्वारा 500 और 1000 रूपए का नोट राजस्व के रूप में स्वीकार किए जाएं।